E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

राजा दानवों का विनाश करके इन्द्र की आशा पूरी करता है। इन्द्र राजा को एक विशाल समारोह में विदाई देता है। रथ से लौटते समय उसे हेमकूट पर्वत पर मारीच ऋषि का आश्रम दिखलाई पड़ता है। दुष्यन्त मातलि के साथ रथ से उतर कर इन्द्र, विष्णु आदि देवताओं और ब्रह्मा के पौत्र कश्यप तथा उनकी धर्मपत्नी अदिति के दर्शनार्थ जाता है।

शुभ शकुन की द्योतक राजा की दक्षिण भुजा फड़कती है। इतने में ही राजा दो तपस्विनियों द्वारा अनुसरण किये जाते हुए एक बालक को देखता है। वह बालक सिंह शावक को माँ का दूध नहीं पीने देता है एवं शावक का दाँत गिनने का प्रयत्न करता है। उस बालक को देखकर राजा का वात्सल्य उमड़ पड़ता है। वह उसे गोद में ले लेता है। तभी बच्चे का चक्रवर्ती लक्षण युक्त हाथ भी देख लेता है। बच्चे की आकृति राजा दुष्यन्त से मिलती है। राजा उस बालक का वंश पूछता है। तपस्विनी के द्वारा शिशु के वंश का ज्ञान होने पर पुरुवंशी राजा के हृदय में आशा का सञ्चार होता है। तभी दूसरी तपस्विनी बालक के लिये मिट्टी का मोर ले आती है और कहती है "सर्वदमन इस शकुन्त (पक्षी) का सौन्दर्य देख"। बालक को शकुन्त शब्द से माता का भ्रम हो जाता है। वह पूछता है "कहाँ है मेरी माँ"? इस पर दुष्यन्त सोचता है कि क्या इसकी माता का नाम भी शकुन्तला है? इतने में बच्चे के हाथ से गिरा हुआ रक्षासूत्र दुष्यन्त उठाने लगता है। तपस्विनी यह कहकर मना करती है कि माता-पिता के अतिरिक्त यह सूत्र उठाने वाले को सर्प बनकर डँस लेता है। परन्तु दुष्यन्त का कुछ भी अमङ्गल नहीं होता। वह मनोरथ पूर्ण होने पर बालक का आलिङ्गन करता है। तभी सूचना पाकर तपस्या के कारण कृश एवं वियोग-विधुरा शकुन्तला आती है। वह राजा को प्रणाम करती है। राजा अपनी विस्मृति के लिये उससे क्षमा याचना करता है। उसी समय मातलि आता है। शकुन्तला एवं पुत्र सहित राजा मारीच के दर्शन करता है एवं यथोचित आशीष प्राप्त करता है। मारीच योगबल से जान

लेते हैं कि दुर्वासा के शाप के कारण ही शकुन्तला को दुष्यन्त ने विस्मृत कर दिया था। वह शाप अँगूठी दर्शन से समाप्त हो गया और राजा निर्दोष है। मारीच सर्वदमन के भावी सम्राट् होने की बात कहते हैं। महर्षि मारीच दोनों के सुखद संयोग के समाचार को कण्व तक पहुँचाते हैं। पुत्र सहित दम्पत्ति को आशीर्वाद देकर विदा करते हैं। भरत वाक्य के साथ सप्तम अङ्क समाप्त हो जाता है।